Topic 42

कण्ड्वादिगण की धातुएँ

कण्ड्वादिभ्यो यक् ।

एभ्यो धातुभ्यो नित्यं यक् स्यात् स्वार्थे । कण्डूञ् गात्रविघर्षणे । कण्डूयति । कण्डूयते । इत्यादि ।

'कण्डूञ्' आदि धातुओं के बाद 'यक्' प्रत्यय होता है। उदाहरण के लिए 'कण्डू' धातु से 'यक्' प्रत्यय होकर 'कण्डूय' रूप बनता है। इस स्थिति में इसकी धातुसंज्ञा होने पर लट्लकार के प्रथमपुरुष - एकवचन में तिप्, शप् और पर-रूप होकर 'कण्डूयति' रूप सिद्ध होता है, आत्मनेपद प्रत्यय आने पर 'कण्डूयते' रूप बनता है।

'वि' और 'परा' उपसर्गपूर्वक 'जि' धातु के बाद आत्मनेपद आता है। यह 'शेषात्कर्तरि परस्मैपदम्' का अपवाद है। उदाहरण के लिए लट् लकार के प्रथम पुरुष एकवचन में 'वि' पूर्वक 'जि' धातु से आत्मनेपद प्रत्यय 'त' होकर 'विजित' रूप बनता है। तब गुण, शप्, अयादेश और एत्व आदि होकर 'विजयते' रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार 'परा' उपसर्गपूर्वक 'पराजयते' रूप बनता है।

सम्भव-प्र-विभ्यः स्थः।

सन्तिष्ठते। अवतिष्ठते। प्रतिष्ठते। वितिष्ठते।

अपह्नवे ज्ञः।

शतमपजानीते = अपलपतीत्यर्थः।